चतुर्थ अध्याय

'आधा गाँव' में चित्रित समस्याएँ

"आधा गांव" में चित्रित समस्याएँ –

सामाजिक समस्याएँ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जिनको समाज के रीति–रिवाजों या भलाई के लिए हानिकारक समझकर उनको दूर करने की आवश्यकता अनुभव की जाती है । वास्तव में सामाजिक समस्या वैयक्तिक धारणा, समाज की मानसिकता, युगीन परिवेश के आधारपर निश्चित की जाती है । एक समाज किसी एक परिस्थिती को समस्या मानता है तो दूसरा उसे समस्या के रूप में नहीं देखता । परिस्थिति और रूचियों के परिवर्तन के साथ समस्याओं के रूपों में भी बदल होता है फिर भी युध्द, बेरोजगारी, गरीबी, अपराध वृत्ति आदि को सदैव प्रत्येक समाज समस्या के रूप में देखता आया है ।

राही मासूम रजा ने "आधा गाँव" उपन्यास में गाजीपुर जिले के गंगौली नामक गाँव को प्रस्तूत किया है । इस गाँव में हिन्दुओं और मुसलमानों की अनेक जातियाँ रहती हैं परन्तु लेखक ने सिर्फ शीआ मुसलमानों के जीवन को चित्रित कर सन् 1937 ई.से सन् 1952 ई.तक के पन्द्रह वर्षों की अवधि में होनेवाली घटनाओं और उन घटनाओं की प्रतिक्रियाओं का लेखाजोखा प्रस्तुत किया है ।

गंगौली में सुन्नियों की तुलना में शीआ मुसलमानों की संख्या कम है फिर भी उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा अधिक मिलती है । इस समाज का सदस्य होने के नाते उपन्यासकार ने अपनी भोगी और देखी हुई जिंदगी को अभिव्यक्त करते समय जमींदारी उन्मूलन, पाकिस्तान की माँग एवं निर्माण आदिसे उत्पन्न समस्याओं का आलेख प्रस्तुत किया है ।

1 साम्प्रदायिकता की समस्या

भारत में प्राचीन काल में एकात्मकता के दर्शन होते थे विभिन्न जाति–धर्म के लोग आपस में सद्भाव से रहते थे । परंतु धीरे–धीरे अस्पृश्यता और अल्पसंख्यक समूह, भाषावाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता आदि असामाजिक तत्वों का बोलबाला बढ़ता गया । आधुनिक युग में विभिन्न राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों की गति तीव्र होने के साथ उक्त असामाजिक तत्वों ने

विकराल रूप धारण कर लिया है । साम्प्रदायिकता की विषाक्त लहर आधुनिक युग की देन मानी जाती है । इसको विकसित करने का घिनौना काम अँग्रेज शासकों ने किया है ।

अँग्रेज शासन काल में अँग्रेजों ने कभी एक वर्ग का पक्ष लिया तो कभी दूसरे वर्ग को संरक्षण दिया । ऐसे व्यवहार करने में उनका विचार सिर्फ हिन्दू–मुस्लिम दंगे और जातीय द्वेष निर्माण करना ही था । उन्होंने मुसलमानों को प्रतिनिधित्व की माँग कराने के लिए प्रेरित किया । सन् 1909 ई. में "मार्ले–मिण्टो सुधार अधिनियम" पारित हुआ । इस अधिनियम से देश में प्रथम बार साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली का सूत्रपात हुआ । मुसलमानों को अपने अलग प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया । उनके लिए अलग विश्वविद्यालय, वाणिज्य संघ और नगर पालिकाओं में स्थान सुरक्षित रखे गये । सन् 1921 ई.में हिन्दू-मुसलमान झगडे हुए । सन् 1937 ई.में. हिन्दू मुस्लिम संघर्षों की संख्या अधिक होने का प्रमुख कारण वैधानिक समस्याओं के प्रति मतभेदों में तीव्रता थी । सन् 1940 ई.में लाहौर अधिवेशन हुआ जिसमें पाकिस्तान की माँग को आगे बढाया । सन् 1946 ई.मे भारत में चुनाव हुए । इसमें मुस्लिम लीग को काफी सफलता मिली । उस वक्त अनेक स्थानोंपर साम्प्रदायिक दंगे हो गये । पहले काँग्रेस ने पाकिस्तान माँग का विरोध किया परंतु अन्त में परिस्थिति से विवश होकर देश के बंटवारे की माँग को स्वीकार किया ।

"आधा गाँव" के कथावाचक और आम लोगों की धारणा है कि जिन्ना के नेतृत्व मे मुस्लिम लीग ने गलत राजनीति का प्रचार किया और पद एवं अधिकारों की लालसा रखनेवाले मुसलमानों ने इसका साथ दिया । वास्तव में गंगौली की साधारण जनता के मन में आपसी भेदभाव और साम्प्रदायिकता की भावना नहीं थी । वहाँ के हिन्दू और मुस्लिम मिलजुलकर रहते थें । गंगौली का मोहर्रम –हिंदू–मुसलमानों का त्यौहार था । परंतु मुस्लिम लीग की घिनौंनी प्रचार नीति और "डायरेक्ट ॲक्शन" के फैसले ने गंगौली की एकता की जडों को हिला दिया । मुस्लिम लीग पार्टी की माँग करने लगी । मगर साधारण लोग पाकिस्तान के बनने में रूचि नहीं रखते थें । उनका कहना था – "पाकिस्तान –आकिस्तान पेट भरने के खेल है।"(1) साधारण जनता के विरोध–समर्थन का विशेष प्रभाव न होकर पाकिस्तान की निर्मिति हो गई । धरती बँट गई, इन्सान बट गया । बँटवारे के साथ साम्प्रदायिकता की आग भडक उठी अनेक निर्दोष हिन्दू –मुसलमानों की हत्याएँ हो गई । लाखों लोग निराश्रित बन गए । सम्पूर्ण भारत–पाकिस्तान में अमानवीय नरसंहार हो गया । सदियों

से एक साथ रहनेवाले पडोसी एक –दूसरे के खून के प्यासे बन गए । राजनीति के इस घृणित पहलू का लाभ नेतागणों को हो गया और हानि का दु:ख साधारण जनता को भोगना पडा । पाकिस्तान का जन्मदाता आराम से पाकिस्तान में बैठ गया और साधारण जनता खून की होली में रंग गई । उन्हें अनेक कठिनाइयों का शिकार होना पडा । पाकिस्तान के निर्माण के साथ पाकिस्तान का अर्थ और परिणाम समझे बिना मत देनेवाले अपना क्षोभ–आक्रोश–दु:ख व्यक्त करते हुए कहने लगे – "इनके जिन्ना साहब त हाथ झाड के चले गए की हिआं के मुसलमान जाएं, खुदा न करें जहन्नूम में । ई अच्छी रही । पाकिस्तान बने के वास्ते ओट दे हिआं के मुसलमान और जब पाकिस्तान बने त जिनवा कहे की हिआं के मुसलमान जाएं चूल्हे–भाड में"।(2) गंगौली के लोग मानते हैं कि पाकिस्तान का निर्माण मुस्लिमों की अल्प संख्याकोंके रूप में रहने की तैयारी न होने के कारण ही हुई है । पाकिस्तान बन जाने से मुसलमानों की कोई समस्या नहीं सुलझी बल्कि अनेक मुस्लिम युवक पाकिस्तान में गए परिणामत: अनेक परिवार टूट गए और पूरे गाँव में अकेलापन भर गया । लडकों की संख्या कम होने के कारण लडकी का विवाह एक समस्या बन गई । पारिवारिक बिखराव और बढती हुई समस्याओंके कारण अनेक लोग पाकिस्तान से नफरत करने लगे ।

आपबीती और जगबीती के द्वारा गंगौली का समग्र अंकन करनेवाले राहीजी ने स्पष्ट किया है कि मुस्लिम लीग के प्रचार तंत्र से प्रभावित गंगौली तथा अन्य स्थान के मुसलमानों ने पाकिस्तान का अर्थ और परिणाम समझे बिना ही पाकिस्तान के निर्माण के पक्ष में मत दिया । पाकिस्तान का निर्माण कितना अहितकारी और घातक सिध्द हुआ इसको स्पष्ट करते हुए लेखक बताते हैं – कलकत्ता, बम्बई, कानपुर या ढाका कहीपर भी आदमी पैसा कमाने जाए तो वापस वह अपनी जगह या गाँव आ ही जाता है, पर पाकिस्तान चला जानेवाला आदमी वापस लौटकर नहीं आता क्योंकि उसका हिंदुस्तान में रहने का हक छीन जाता है । उसे हिन्दुस्थानकी जमीन से अपना नाता तोडना पडता है । गंगौली की मिट्टी के साथ जुडे हुए गंगौली के मुसलमान हिन्दुस्तान से नाता तोडकर पाकिस्तान जाने का विरोध करते हुए कहते है – "ए भाई, बाप–दादा की कबर हियां है, चौक इमामबाडा हियां है, खेत–बाडी हियां है । हम कौनो बुरबक हैं कि तोरे पाकिस्तान जिंदाबाद में फँस जाए ।"(3) इस्लामी हुकूमत कायम करने के हेतु पाकिस्तान के पक्ष में मत देनेवालों को सत्य स्थिति का ज्ञान हुआ –"ई पाकिस्तान त हिंदू–मुसलमानों को अलग करे को बना रहा । बाकी हम त ई देख रहे की ई मियां–बीवी, बाप–बेटा और भाई–बहन को अलग कर रहा है"।(4) पारिवारिक और

सामाजिक जीवन में तनाव–टकराहट और अलगाव एवं अकेलेपन की भावाना निर्माण करनेवाली घटना के रूप में पाकिस्तान की निर्मिति को देखनेवाले उपन्यासकार राहीजी "आधा गाँव" की कहानी के बारे में लिखते हैं – "यह कहानी सच पूछिए तो उन्ही गुब्बारों की है या शायद उन बच्चों की जिनके हाथों में मरी हुई डोर का एक सिरा है और जो अपने गुब्बारों की तलाश कर रहे हैं और जिन्हें यह नहीं मालूम कि, डोर टूट जाने पर उन गुब्बारों का अंजाम क्या हुआ ।"(5)

पाकिस्तान बनाने में एवं देश–विभाजन में साधारण मुसलमानों की भूमिका न के बराबर थी । गंगौली के साधारण हिन्दू–मुसलमानों की समझ में यह नहीं आता कि एकाएक पाकिस्तान की आवश्यकता क्यो उत्पन्न हो गई । पाकिस्तान कहाँ बनेगा ? वह कैसा होगा ? आदि से अपरिचित साधारण लोगों को साम्प्रदायिकता के जहर ने विषाक्त बना दिया । सदियों से एक साथ रहनेवाले उन लोगों के मन में द्वेष्य, प्रतिशोध, ईर्ष्या की भावाना निर्माण हो गई । वे एक –दूसरे के दुश्मन बनकर खून की होली खेलने लगे । अंग्रेजों की कूटनीति और मुस्लिम लीग की आक्रमक भूमिका से देश की जनता में अलगाव की भावना बढ गयी । इस परिस्थिति से विवश होकर तत्कालीन नेताओं नें बँटवारे को स्वीकृति दी । धर्म के नाम पर लडने–मरने को तैयार लोग धीरे–धीरे प्रगतिशील विचारों से परिचित होकर साम्प्रदायिक ताकतों को नष्ट करने की कोशिश करने लगे परंतु यह आग हमेशा के लिए समाप्त न होकर समय–समय पर भडकती रही है । स्वार्थी नेतागणों और धर्म के अंधे समर्थकों ने हमेशा आग में घी का काम किया है । वास्तव में आपस में लडने–झगडने की प्रवृत्ति लोगों में हमेशा नहीं रहती स्वार्थी लोगों द्वारा उकसाये जाने के कारण भोले लोग उत्तेजित होकर खून की नदियाँ बहाते हैं । इन भोले –भाले लोगों की समझ में यह बात नहीं आती कि अपराध किस का है और सजा किसको दी जा रही है ? वे यह नहीं सोचते कि जन्म से एकसाथ रहनेवाले पडोसी का घर क्यो जलाया जाय ? पडोसी के खून से हाथ गंदे क्यों किए जाय ? जब साधारण जनता की समझ में यह बात आयेगी कि साम्प्रदायिक झगडों के मूल में राजनीतिक नेतागणों और धर्म के ठेकेदारों का स्वार्थ है । उस वक्त साम्प्रदायिक दंगे बन्द हो जायेंगे । इस तथ्य को उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है ।

2. जातिवाद की समस्या

भारतीय समाज–जीवन पर जाति–व्यवस्था का प्रभाव गहरा है । यह व्यवस्था सदियों से व्यक्ति के सामाजिक स्तरीकरण का कार्य करती आयी है । प्रारम्भिक काल में यह व्यवस्था व्यवसायाधिष्ठित थी परंतु आगे चलकर जन्माधिष्ठित जातिप्रथा का प्रचलन होकर जातिवादी मनोवृत्ति विकसित हो गई । जातिवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण प्रत्येक जाति अपनी श्रेष्ठता और दम्भ को बनाये रखने की कोशिश करती है । जातिवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण आपसी शत्रुता–तनाव–संघर्ष की स्थिति निर्माण होती है ।

भारत में हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी जातीय श्रेष्ठत्व के विचार है । "आधा गाँव" उपन्यास में चित्रित खानदानी शीआ मुसलमान हड्डी की शुध्दता रखने के लिए रोटी–बेटी सम्बन्धों का विरोध करते हैं । वे अपने आपको इमाम हुसैन के वंशज मानकर सैयद और सर्वश्रेष्ठ सरदार घोषित करते हैं । वे पुरानी शत्रुता के अनुसार मोहर्रम के समय अन्य तीन खलिफाओं पर अपमानजनक कविताएँ गाते हैं, जिसे "तर्बरा" कहा जाता है । "तर्बरा" शीआ और सुन्नी के झगडे का कारण बनता है । मोहल्लेबाजी और पट्टीदारी के छोटे–छोटे दायरों में बँटा हुआ समाज बात–बात पर फौजदारियों में गर्व महसूस करता है । उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है की उत्तरपट्टी और दक्खिनपट्टी के बाहर अनेक जुलाहा और राकी परिवार हैं जिनके साथ शीआओं का मेलजोल या रोटी–बेटी के सम्बन्ध नहीं है । उनका ओहदा हिन्दू चमारों से ऊँचा है ।

जन्माधिष्ठित जाति–व्यवस्था के कारण बडी जातियों में अभिमान श्रेष्ठत्व एवं धमण्ड की भावना विकसित होती हैं । बडी जातवाले जन्म से प्राप्त अधिकारों का प्रयोग कर छोटी जाति की नारी को वासनातृप्ति का साधन बनाते हैं । गंगौली के बडी जातिवाले कुलिनता और जातीय श्रेष्ठत्व का घमण्ड करते हैं । वे छोटी जाति की नारी को रखैल बनाकर रखने में गौरव अनुभव करते हैं । छोटी जाति की नारी के साथ शरीर सम्बन्ध रखकर हरामी औलाद से घर भरनेवाले रखैल को घर के सभी भागों मे घूमने–फिरने की अनुमती न देकर अपनी प्रतिष्ठा का ढोंग रचते हैं । डॉ. राही मासूम रजाजी ने जातीय घमण्ड और रक्तशुध्दता का ढोंग रचनेवालों की नीच मनोवृत्ति को आलोच्च उपन्यास में चित्रित किया है । कथावाचक के दादा ने "नईमा दादी को निकाहमें ले लिया और फिर उनके लिए यह खलवत बनवाई । नईमादादी बरहहाल जुलाहिन थी और सैदानियों के साथ नहीं रह

सकती थी ।"(6) जातीय घमण्ड और पाखण्ड को बनाये रखने के हेतु छोटी जाति की नारी को घर से दूर रखकर शरीर सम्बन्ध रखे जाते हैं ।

जातीय श्रेष्ठत्व की भावना रखनेवाले अपने घमण्ड और दम्भ को बनाये रखने के हेतु एक पंगत में खाना खानां, दूसरों का छुआ खाना ग्रहन करना तथा छोटी जाति को छूने का विरोध करते हैं । सैदानी सलिमा से मिलने एवं सलाम करने आयी छोटी जाति की झंगटिया बो का स्पर्श न हो इस हेतु से सकिना उसके हाथ पर ऊपर से पान का बीडा छोडती है । हकीम अली कबीर हिंदू मरिजों की नाडी छूने के बाद स्नान करते हैं । शीआओं के दरवाजों पर राकियों को बैठने के लिए ऐसी कुर्सियाँ दी जाती हैं, जिनमें कपडा नहीं लगा होता, जो केवल टीन या लकडी की बनी होती है। जमींदारी उन्मूलन के बाद हकीम साहब कुर्सियों को रसोई में जला देते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि कही परूसराम जैसे अछूत काँग्रेसी नेता उनके सामने कुर्सियों पर बैठेंगे जिसे वे जमींदाराना शान के खिलाफ समझते हैं । इसप्रकार के अनेक उदाहरणोंद्वारा उपन्यासकार ने मुसलमानों में व्याप्त जातिवादी मनोवृत्ति को दिखाया है ।

रूढी–परम्पराओं के प्रति अत्याधिक ध्यान देनेवाले बडी जातिवाले परम्परागत सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने की कोशिश करते हैं । वे जातिबाहय वैवाहिक सम्बन्धों का विरोध करते हैं । "आध गाँव" उपन्यास में चित्रित शीआ–सुन्नी में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का विरोध किया जाता है । शीआ सुन्नी लडकी को बहू के रूप में स्वीकारने का विरोध करते हैं उन्हें डर है कि सुन्नी बहू मोहर्रम के दिनों में शोक में सम्मिलित न होकर हर्ष–उल्लास के साथ रहेगी । ऐसा करना शीआ परम्परा के अनुसार नहीं है । जातीय दम्भ भरनेवाले शीआ हरामी औलाद से घर भरते हैं मगर उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध रखने का विरोध करते हैं ।

जाति–पाति की भावाना नई पीढी में भी निर्माण करने की कोशिश बडे–बूढोंद्वारा की जाती है। छोटे बच्चों को उपेक्षित या नीच जाति के बच्चों के साथ खेलने तथा मिलने नहीं दिया जाता । इतना ही नहीं स्कूल भी जातीय आधर पर शुरु किये जाते हैं । कमालुद्दीन के स्कूल में छोटी जाति के बच्चे पढते हैं इसलिए बडी जातिवाले अपने बच्चों को उस स्कूल में नहीं भेजते ।

डॉ.राही मासूम रजा जी ने "आधा गाँव" उपन्यास में जातिवाद के घृणित रूप को अंकित कर

स्पष्ट किया है की देश विभाजन का प्रमुख कारण जातिवादी मनोवृत्ति है । आपने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि शीआ लोगों की हेय दृष्टि और भेदभाव के कारण सुन्नी लोग पाकिस्तान के पक्ष में वोट देकर पाकिस्तान चले गए । जातिवाद का विषक्त प्रभाव सामाजिक शान्ति और विकास के पथ की बाधा है । उदारवादी दृष्टि और प्रगतिशील विचारों के द्वारा इस पथ बाधा को नष्ट करना चाहिए ।

3. जमींदारों की मानसिकता

जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् जमींदारों की आय कम हो गई । उनके उत्पादन के साधन नष्ट हो गए फिर भी उनकी शान से रहने की आदत में परिवर्तन नहीं हुआ । सम्पन्न वातावरण में पले जमींदार युग की पदचाप सुनने का विरोध कर पहले की तरह रहने की कोशिश करते रहे लेकिन उत्पादन के साधन न होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति बदत्तर बनती गई । जीविका चलाने के लिए उन्हें घर परिवार छोडकर शहर की ओर भागने को विवश होना पडा उनकी स्थिति इसप्रकार हो गई "सदियों से रहने बसने और जीने मरनेवाले मियाँ लोगों ने देखा कि जिस गाँव को वे अपना कहते और समझते आये थें उस गाँव से अपना कोई रिश्ता ही नहीं रह गया था । इन लोगों के लिए पाकिस्तान का बनना या न बनना बेमानी था, लेकिन जमींदारी के खात्मे ने इतनी शक्सियत की बुनियादें हिला दी । वे घरों से निकले और जब घर ही छूट गया तो गाजीपुर और कराची में क्या फर्क है । कराची में कमसे कम इस्लामी हुकूमत तो है । "(7)

लोगों की इस मानसिकता के कारण जमींदार मन ही मन टूटने लगे । भूतकाल के वैभव के दिनों की याद कर दु:ख प्रकट करते रहें । निराशा–उदासी से जवीन–यापन करनेवाले जमींदार अपना रोब जमाने और दिखावे के पीछे भागने में गौरव अनुभव करते रहें और पाकिस्तान की हुकूमत की प्रशंसा करने में आनंद मानते रहें ।

जमींदारों की वासनांधता जमींदारी उन्मूलन के बाद भी ज्यों की त्यों रही जिसका चित्रण डॉ.राहीजी ने आधा गाँव उपन्यास में किया है । रखैल संस्कृति को प्रश्रय देना, जारज संतान को जन्म देना, रोब–दिखावे की मनोवृत्ति, जातीय श्रेष्ठत्व के झूठे मानदंड, रक्त शुध्दता के खोखले विचार आदि जमींदारों के दुर्गुणों का लेखा–जोखा प्रस्तुत उपन्यास में उपलब्ध होता है ।

4. जमींदारों के शोषण की समस्या

जमींदारों के अत्याचार, क्रूरता की कोई सीमा नहीं हैं । स्वार्थलाभ के लिए घिनौनी नीति को प्रश्रय देनेवाला यह वर्ग अँग्रेज शासनकाल में सर्वेसर्वा बनकर शोषण का नंगा प्रदर्शन कर रहा था । अँग्रेजी हुकूमत को स्थिर बनाने में सहायता करनेवाले इस वर्ग का चित्रण हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में मिलता है । किसान–जमींदार संघर्ष प्रेमचन्द के उपन्यासों से लेकर नागार्जुन तक के उपन्यासों में प्रमुख स्थान पाता आ रहा है ।

"आधा गाँव" के अधिकांश पात्र मुसलमान जमींदार हैं । जमींदारी उम्मूलन की संभावना पर मुस्लिम जमींदार सोचने लगे हैं कि काँग्रेस जमींदारी जरूर खत्म करेगी क्योंकी काँग्रेस हिंदुओं की पार्टी है । इस गलत धारणा के कारण गंगौली के शीआ मुसलमानों के मन में हिंदुओं के प्रति शक पैदा हो गया और जमींदारी उन्मूलन ने तो उन्हें घर से बेघर कर दिया ।

गंगौली के अधिकांश जमींदार गाँव के बहुतसे अज्ञानी, निरपराध लोगों को ठगते थे । फुन्ननमियाँ झिंगुरिया और उसके बारह आदमी को साथ लिए बारिखपुर जाते हैं और शेर मुहम्मद की नौकरानी की तलाश शुरू करते हैं । रात में वह एक बच्चा लेकर सोये औरत को उठाकर ले जाते हैं तभी वह बच्चा रोने लगता है । तब उस बच्चे को दूध देकर दूसरी औरत सुलाती है । तीसरे दिन कुँए से एक औरत की लाश निकाली जाती हैं तो बारिखपुर में शोर होता है । लाश निकालनेपर वह लाश समीउद्दीन खाँ की गुमशुदा बहन की है ऐसा मालुम होता है । फुन्ननमियाँ को यह अफसोस होता है कि नौकरानी की तलाश में वह दूसरे ही स्त्री को मारते हैं उनका वार खाली जाता है । यह सब वे मुकदमे की तारिख सरपर होने के कारण करते हैं । यहाँपर बेगुनाहों पर अत्याचार करनेवाले जमींदारों की कहानी है । किसी की हत्या करना जमींदारों की दृष्टि से साधारन बात होती है । छोटी जाति का अमानवीय शोषण जमींदार अपना हक समझते हैं । छोटी जातिकी औरत को वासनातृप्ति का बेजान यंत्र समझकर व्यवहार करना जमींदारों की दृष्टि में गौरव की बात है । छोटी जाति का आर्थिक शोषण करना उन्हें

शारीरिक दंड देना जमींदार अपनी बपौती समझता है । गंगौली के जमींदारों ने हरामी औलाद से घर भर दिए हैं । उनकी दृष्टि में जारज संतान पैदा करना गौरव की बात है ।

उपन्यासकारने जमींदारों के शोषण आत्याचार का विस्तृत वर्णन किया है ।

5. भाषा समस्या

हिन्दी के अनेक उपन्यासकारों ने हिंदी–उर्दू के झगडे का चित्रण किया है । वास्तव में उर्दू का जन्म हिन्दी से हुआ है लेकिन उर्दू समर्थक इस ऐतिहासिक सत्य का विरोध कर उर्दू को मुस्लिम धर्म की भाषा घोषित कर साम्प्रदायिकता के चश्मे से देखते हैं । अँग्रेज शासक "फुट डालो और राज्य करो" नीति के समर्थक होने के कारण उन्होने इस झगडे को बढावा दिया और भाषा समस्या साम्प्रदायिक झगडे के रूप में बदल गयी ।

दूर–दराज के अंचलों में स्थानीय बोली का प्रयोग हिंदू–मुस्लिम करते रहें । दोनों की भाषा में कोई अन्तर नहीं है लेकिन स्वार्थी नेतागणों और धर्म के ठेकेदारोंने दो धर्मों के लोगो के मन में शत्रुता निर्माण करने का घिनौंना कार्य किया है। उन्होने अपने स्वार्थ के लिए भाषा का प्रयोग झगडे के हेतु किया है। साधारण लोग हिंदी–उर्दू के झगडे से बचकर स्थानीय बोली का समर्थन करते रहे जैसे–"आप तो शायद इस जबान को समझे भी नहीं होंगे क्योंकि आप लोगों ने तो उर्दू को मुसलमान करलिया है मगर खुदा की कसम जो, जबान इस वक्त मैं बोल रहा हूँ वह मेरी मादरी जबान नहीं है, मेरी मादरी जबान तो वही है जिसमें मुमताज ने अपनी मां को पैगाम भेजा था । यह उर्दू बोलने पर तो हम्माद दा पूरे गांव में नक्कू बने हुए हैं ।"(8)

"इस खडीबोली की वजह से हम्माद मियाँ दिन–ब–दिन उत्तरपट्टी और दक्खिनपट्टी के लोगों से दूर होते जा रहे थें । लोगों का कहना था कि भई कहीं बाहर जाओ तो उर्दू, अँग्रेजी, फारसी बोलो । अपने घर में बाप–दादा की जबान बिगाडने में क्या फायदा । ...उनकी लडकियां यू तो घर आंगन की जबान बोलती लेकिन जैसे ही हम्माद मियाँ दाखिल होते वे तडातड उर्दू बोलने लगती । उन्हें यह खडीबोली जबान निहायत ही बद आवाज और मगरूर मालूम होती । वे इस जबान में दिल की बात बताने मे डरती थी ।"(9)

उपर्युक्त प्रसंगद्वारा राहीजी ने उत्तर प्रदेश की खडीबोली और अन्य बोलियों की समस्या की ओर संकेत किया है ।

आगे चलकर लेखक ने उपन्यास के पात्र "मन्नो" के माध्यम से यह बताने का प्रयत्न किया है कि नई पीढी की पढी–लिखी लडकियाँ हिंदी सीख रही हैं । वे धर्म को जबान से मिलाकर नहीं देखती, जब कि बूढ्ढी औरते आपने गांव की बोली के सिवाय और कुछ नहीं जानती । गांव की सभी औरतें मन्नो को कोसती हैं । हम्मादमियाँ के माध्यम से भी हिंदी का प्रचार दिखाया गया है ।

गंगौली के पात्रों की "भोजपुरी–उर्दू" की मांग स्वाभाविक है । क्योंकि गांव के लोग अजनबी भाषा को पसंद नहीं करते । यह कथा खडीबोली उर्दू में कही गई है पर पुस्तक देवनागरी लिपि में छपी है । अरबी फारसी के अनेक शब्द आये हैं । पात्रों की बातचित में ऐसे पद या मुहावरे आये हैं जिन्हे सभ्य साहित्य पंसद नहीं करता । गालियों को इस उपन्यास में पात्रों के आवेश को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया है । लेखक ने मुहर्रम की मजलिसों में पढी जानेवाली कविताओं को उर्दू में न लिखकर देवनागरी लिपि में लिखा है परिणामतः उसका गहरा प्रभाव लोगों पर नहीं पडता ।

इसप्रकार राही यह बताते हैं कि उत्तर प्रदेश के असंख्य परिवारवालों को भाषा एवं बोली की समस्या का सामना करना पडता है ।

6. भ्रष्टाचार की समस्या

बेरोजगारी, गरिबी, लालच, प्रतिशोध की भावाना, भौतिक सुविधा भोगने की लालसा, पक्षपात करने की नीति, अधिकार, और बडप्पन दिखाने की भावना, कम श्रम में अमीर बनने की इच्छा आदि के कारण भ्रष्टाचार होता है । इससे सामाजिक नियमों का उल्लंघन होकर समाज में अनैतिकता बढती है ।

भ्रष्टाचार के कई एक प्रकार गिनाए जाते हैं –जैसे प्रशासनिक व्यवस्था का भ्रष्टाचार, राजनैतिक भ्रष्टाचार, व्यापारियों का भ्रष्टाचार, शिक्षा संस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, धर्म की आड में किया जानेवाला भ्रष्टाचार आदि ।

राहीजी ने पुलिस व्यवस्था के भ्रष्टाचार को प्रशासनिक भ्रष्टाचार के रूप में चित्रित किया है । पुलिस रिश्वत लेकर अपराधियों को छोडती है और निर्दोष को फाँसीपर चढाने से नहीं डरती । उपन्यासकार ने इसको स्पष्ट करते हुए लिखा है कि मोहर्रम के दिनों में गंगौली में लोग हमेशा किसी न किसी बात पर झगडा करते हैं । हकीम साहब का बडा अरमान था कि किसी न किसी तरह एकबार दक्खिन पट्टीवालों का गरूर टूट जाये । उन्ही दिनों पासवाले गाँव में (बरखापूर) एक कत्ल हो गया । हकीम साहब ने थानेदार से कहकर कोमिला चमार को नामजद करवा दिया । हकीम साहब के भाई इलाके के बडे जमींदार थे इसीलिए उन्होने सिर्फ एक सौ एक रूपया लेकर कोमिला को नामजद कर दिया । पहले ही यह तय हूआ था कि कोमिला के खिलाफ मुकदमा कमजोर बनाया जायेगा । थानेदार ने असली कातिलों से ग्यारह सौ रुपये रिश्वत लेकर कोमिला की रिहाई करने का वादा किया जिससें मुकदमा बिल्कुल बेजान होगा और वे लोग छूट जायेंगे । कोमिला की गिरफ्तारी के बाद थानेदार ने फिरसे उसकी रिहाई का वादा करके कोमिला की माँ की तरफ से फिर सौ रुपए इस काम के लिए लिए । कोमिला की माँ उत्तरपट्टी के इमाम चौक पर मन्नत माँगती है कि उसका बेटा छूट जाये ।

जब दक्खिन पट्टीवालों को यह समाचार मिलता है तो वे कासिमाबाद के थानेदार को तीन सौ रूपये देते हैं जिससे कोमिला को फाँसी न हो लेकिन सजा जरूर हो जाए । साथ ही कोमिला के पिता की एक अन्य चमार से पुरानी शत्रुता थी वह बदला लेने के लिए थानेदार को अपनी तरफ से 600 रूपये देता है थानेदार उसका भी वायदा पूरा करने की बात कहता है ।

मुकदमे के शुरु होने पर कई अच्छे गवाह मिलते हैं फिर भी कोमिला को फाँसी हो जाती है ।

बेगुनाह को फाँसी पर चढानेवाली पुलिस व्यवस्था भ्रष्टाचार –अत्याचार को बढावा देकर मानवीय मूल्यों को किस प्रकार तहस–नहस कर रही है । इसे उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है ।

गंगौली के ठाकूर हरनारायणदास भी वार–फंड के लिए चांदा इकठ्ठा करने के लिए आते हैं और बीस हजार की रसीद जनता में वितरीत करने और तीस हजार रूपए अपनी जेब के लिए बचाने

की योजना बनाते हैं ।"(10) एक और उदाहरण इस उपन्यास में नजर आता है जहाँ "फुन्ननमियाँ थानेदार को तीन सौ रूपए देकर काम बना लेते हैं ।"(11)

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले और बाद में सरकारी कर्मचारियें और पुलिस विभाग के कुकर्मों से तंग आकर लोगो ने विरोध करने की कोशिश की है । हिन्दी साहित्यकार ने ऐसे अनेक चित्रों को प्रस्तुत किया है । डॉ.राहीजी ने इस प्रकार के अनेक भ्रष्टाचारी मनोवृत्ति के कारणों का विस्तार के साथ विवेचन किया है । अन्होंने स्पष्ट किया है कि कम श्रम में अधिक लाभ पाने की इच्छा, दिखावे की भावना, श्रेष्ठत्व के खोखले मानदंड, अत्याचारी प्रवृत्ति, लालची स्वभाव आदि के कारण भ्रष्टाचार का दायरा विस्तृत बनता जा रहा है ।

7. बेरोजगारी की समस्या

अनेक समस्याओं को जन्म देनेवाली समस्या के रूप में बेरोजगारी का उल्लेख किया जाता है । इससे आर्थिक, सामाजिक जीवन प्रभावित एवं दुषित होता है । दिन–ब–दिन बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप से सामने आकर हमारे समूचे जीवन को ग्रस्त कर रही है ।

आधुनिक युग में विश्वयुध्दों के परिणामस्वरूप इस समस्या का अत्याधिक विकास हुवा है । औद्योगीकरण और नागरीकरण नाम की नवीन धारणाओं के कारण कृषक बेकारी बढ गई और गाँव के लोग शहर की ओर भागने लगे । इससे नगरों में बेकारी की समस्या निर्माण हुई । जनसंख्या में वृध्दि, आर्थिक मंदि, गतिशीलता की कमी, औद्योगीक सभ्यता का विकास, मुक्त अर्थ व्यवस्था, नीजिकरण, तथा मजदूर–मालिकों के बीच तनाव–संघर्ष, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, प्रतिष्ठा के खोखले मानदण्ड आदि के कारण बेरोजगारी की समस्या दिन–ब–दिन अधिक विकराल बनती जा रही है ।

राही जी ने "आधा गाँव" में ग्रामीण बेरोजगारी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है । बेरोजगारी के कारण ही गाजीपुर के युवक अपना गाँव छोडकर नौकरी की तलाश में कलकत्ता चले जाते हैं । वहाँपर वे अपना अधिक समय नौकरी की तलाश में ही बीताते हैं जिससे उनकी पत्नियों को अधिकांश जीवन काल विरह में बिताना पडता है । उनकी दशा का चित्रण राहीजी ने इसप्रकार किया है ।

"कलकत्ता किसी शहर का नाम नहीं है । गाजीपूर के बेटे–बेटियों के लिए यह भी विरह का एक नाम है । यह शब्द विरह की एकपूरी कहानी है, जिसमें न मालूम कितनी आँखों का काजल बहकर सूख चुका है । हरसाल हजारों–हजार परदेश जानेवाले मेघदूत हजारों–हजार संदेश भेजते हैं ।"(12)

राहीजी गाजीपुर के पुराने किले के वर्णनद्वारा उस गाँव की दयनीय स्थिति को बतलाते हैं कि अगर अब भी इस किले की पुरानी दीवार पर कोई आ बैठे और अपनी आँखें बंद कर लें तो वह उस पार भारत की ऐतिहासिक घटनाओं का देख सकता है । लेकिन इन दीवारों पर कोई बैठता ही नहीं । क्योंकि जब इन पर बैठने की उम्र आती है तब उन्हें रोटी की तलाश में गाँव छोडकर भागना पडता है । विरान दिल और खाली आँखों से वे चूपचाप खेतों के सपने लेकर गाँव छोडते हैं ।

बेरोजगारी की समस्या का प्रभाव मनुष्य के सारे जीवन पर पडता है । उसका जीवन छिन्न–भिन्न होकर केवल यांत्रिक होता है जिसमें सुख–दुःख और मानवीय सम्बन्धों का अभाव रहता है ।

8. दरिद्रता

भारत के ग्रामीण समुदाय की सबसे बडी समस्या उसकी दरिद्रता है । जिसका भयानक रूप गाँव में दिखाई देता है । हिन्दी कहानियों और उपन्यासों मे इसका चित्रण बहुत है । खास तौर से प्रेमचन्द की रचनाओं में किसानों की दरिद्रता का वर्णन है ।

राहीजी ने "आधा गाँव" में जमींदार परिवारों में पाई जानेवाली दरिद्रता का वर्णन किया है । उनकी जमींदारी तो सिर्फ नाम की ही है । वे अपनी शान को बनाए रखने के लिए सैकडों रुपए खर्च कर देते हैं । खर्च करने की बुरी आदत के कारण उनका अंत करूणाजनक होता है ।

बहुत से दरिद्र परिवार झट से धनवान बनने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं । गंगौली के अब्बूमियाँ इसके अच्छे उदाहरण हैं जो "शमा मुअम्मा" हल करके तुरन्त धनवान बनना चाहते हैं । बीवी के धमकाने पर भी "शमा मुअम्मा" हल करते हैं और खुदा से दुआ में इनाम मिल जाने को

कहते हैं । पर उन्हें कभी इनाम नहीं मिलता । पहले जो जमींदार शान से रहते थें । जमींदारी उन्मूलन के बाद उन लोगों की स्थिति पहले से बहुत ही खराब हो गई है । अब तो उन्हे रोटी भी नसीब नहीं होती । फुस्सूमियाँ रोटी कमाने के लिए छोटी सी जूते की दूकान खोलते हैं । जिस गाँव में लडकियों को पढाना बुरा माना जाता था वहाँ पर सईदा अलीगढ़ विश्वविद्यालय से पढकर टीचर हो गई है । वह अपने परिवार को पालती है । आरम्भ में उसको भला बुरा कहनेवाली औरतें उसकी कमाई देखकर प्रशंसा करती हैं । यह परिवर्तन दिखाकर लेखक यह बताना चाहते हैं कि शीआओं का पुराना वैभव और ऐश्वर्य समाप्त हो गया है । लेखक यह भी बताते हैं कि दरिद्रता एक ऐसी चीज है जिसका समाधान केवल आशा से भरी कल्पना से संभव नहीं होता । अपितु समय की गति के साथ हर एक को बदलना आवश्यक है ।

9. **ऋण की समस्या**

यह समस्या भारत की सबसे प्रधान सामाजिक और आर्थिक समस्या है । जनसंख्या में वृध्दि , खेतों का विभाजन, शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता, मुकदमे बाजी, सरकार की कर योजना, बेरोजगारी, उत्सवप्रियता, प्राकृतिक विपदा आदि ऋण के प्रमुख कारण माने जाते हैं । इस जंजाल से मुक्ति पाना आसान नहीं है ।

भारत–पाकिस्तान के विभाजन के पश्चात गंगौली के बहुत से लोगों की दयनीय दशा हो गई है । हकीमसाहब अपने मित्र से इस बारे में कहते हैं – "एक ठो बेटा रहा...ओ पाकिस्तान चला गया । एक ठो जमींदारी रही, ओहू को समझो कि पाकिस्तान चली गई । अरे जोन चीज हमरे पास न है, ओ पाकिस्तान न गयी ? हमरे पास रह का गवा है ? एक ठो बेवा बेटी, तीन ठो भतीज, नवासे–नवासी, एक ठो बहू ओही बेवया ही है, तीन ठो पोता–पोती, ओहू को यतीमें समझो । कल एक ठो खजाना और मिल गया सुखरमवा नालिश कर दिहन है । अब हम ओका कर्जा कहाँ से दें ? हमरी समझ में तो कुछ आता न । नौ परानी का पेट कैसे चलायें ?"(13)

उपन्यासकार ने ऋण की समस्या के कारणों के रूप में पाकिस्तान की निर्मिति जमींदारी उन्मूलन कानून, बेरोजगारी तथा वैभव –लालच की तीव्र आकांक्षा आदि का उल्लेख किया है ।

10. युध्द की समस्या

युध्द आन्तरराष्ट्रीय संबधों के साथ-साथ व्यक्तियों के नैतिक आदर्शों को भी नष्ट कर देता है । साथ ही पारिवारिक जीवन का नाश भी कर देता है । मनुष्य की युध्द की प्रवृत्ति उसके जन्म से ही रहती है जिसे वह कभी दूर नहीं कर सकता । वास्तव में युध्द मनुष्य की विकृति मानी गई है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में युध्द का चित्रण पहले से ही काफी कम हुवा है । श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपनी कहानी "उसने कहा था" में प्रथम विश्वयुध्द का वर्णन किया है ।

राही मासूम रजा जी ने "आध गाँव" में एक पात्र मेजर तन्नूद्वारा द्वितीय विश्वयुध्द की भयावहता, अमानवीयता, बर्बरता, को रेखांकित किया है। युध्द में मरने-मारनेवाले सैनिक एक दूसरे से परिचित नहीं होते फिर भी एक-दूसरे को दुश्मन समझते हैं । युध्द की मानसिकता स्पष्ट करते हुऐ तन्नू कहता है – "लडाई में मरनेवाले बडी बेबसी की मौत मरते हैं मारनेवाला भी बडा बदसूरत हो जाता है क्योंकि अपनी जान बचाने के लिए वह सामनेवाले को दुश्मन मानने और उससे नफरत करनेपर मजबूर होता है । मुमकिन है कि अगर उनमें से कोई मुझे यहाँ गंगौली में मिलता तो मैं उसे सिगरेट पीलाता, गन्ने का रस पीलाता उसे अपने तालाब में नहाने की दावत देता, और फिर रात को उसके लिए किसी ढोल की तरह खिंचे हुए पलंग पर नर्म और गर्म बिस्तर लगवाता और उससे उसके मुलक की बाँते करता । और उसे अपने मुलक की बातें सुनाता । लेकिन वहाँ मैंने उसे मार डाला । क्योंकि अगर मैं उसे न मारता तो वह मुझे मार डालता ।"(14)

इसप्रकार लेखक ने अनेक उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि युध्द के क्षेत्र में होनेवाली मृत्यु बहुत ही भयंकर होती है क्योंकि मरते समय भी परिवार का कोई सदस्य उनके पास नहीं होता । लेखक यहाँ एक दृष्य तन्नूकी याद के रूप में प्रस्तूत करते हैं "न जाने क्यों एक इतालवी सिपाही याद आया जिसे खुद उसने अपनी संगीन पर उठा लिया था । मरते-मरते उसकी आँखो में एक हैरत थी । शायद वह यह सोच रहा था कि वह क्यों मर रहा है । उसने कुछ कहा भी, तन्नू उसे सुन न सका था समझ न सका ।"(15)

युध्द के समय युध्द सिर्फ सिपाहियों के साथ ही होता है ऐसी बात नहीं है तो सैनिक वहाँ की जनतापर भी अत्याचार करते हैं । सैनिकों के अनैतिक व्यवहार की ओर संकेत करते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि युध्द के मैदान में सैनिकों को रोटी के साथ प्यार और बदन की भूख भी लगती है । युध्द के मैदान में अपने शरीर की भूख मिटानेवाले तन्नू को – "चालीस–पैतांलीस साल की वह बेनाम सिजिकियन औरत याद आयी जिसके साथ उसने जिना किया था । रजामंदी का सौदा नहीं । जिना वह स्त्री कह रही थी मैं जानती हूं मेजर हसन कि तुम सिर्फ मेजर हसन नहीं हो । तुम तन्नू भी हो । शब्बू मियां के इकलौते लडके तन्नू ? क्या तुम्हें आपनी माँ की याद नहीं आती ? जरूर आती होगी । वह जिंदा होती तो भी मुझसे कुछ छोटी ही होती । जिसे तुम मेरा स्कर्ट समझ रहे हो वह तो तुम्हारी माँ का गरारेदार पजामा है पगले, उतारो...उतारो...।(16)

युध्द हमारे देश की ही नहीं तो सारे विश्व की एक सामाजिक समस्या है । इससे वर्ण संकरता बढती है । प्रेम, भाईचारा, विश्वबंधुत्व जैसे श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को क्षति पहूँचती है । युध्द से सर्वनाश होता है । इस मानसिकता एवं युध्दलिप्सा पर रोक लगाने के लिए सभी का प्रयत्न आवश्यक है ।

11. प्रेम विवाह की समस्या

संकीर्ण मनोवृत्ति, रूढीप्रियता, जातीय घमंड, रक्तशुध्दता के प्रति अत्याधिक ध्यान देना, धन का घमंड, श्रेष्ठत्व के झूठे मानदंड आदि के कारण प्रेम विवाह का विरोध किया जाता है । आधुनिक युग की यह प्रमुख समस्या है । प्राचीन काल से प्रेम–विवाह का विरोध करनेवाले और समर्थन करनेवालों का चित्रण साहित्यकारों ने सशक्तता के साथ किया है ।

डॉ. राही मासूम रजा जी ने "आधा गाँव" उपन्यास में प्रेम–विवाह की समस्या का चित्रण किया है । उपन्यास में तन्नू अपनी चचेरी बहन सईदा से प्यार करता है लेकिन संकोची स्वभाव के कारण वह अपने मन की बात मन में ही रखकर पिता की इच्छा के लिए फुस्सू मियां की लडकी सलमा के साथ शादी करता है ।

प्रस्तुत उदाहरण के द्वारा उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि सनातनी भारतीय समाज में विवाहपूर्व प्रेम का विरोध किया जाता है । प्रेमियों को एक होने नहीं दिया जाता । अपितु माँ–बाप

अपनी इच्छा के अनुसार उन्हे किसी के भी गले में बाँध देते हैं ।

12) अनमेल विवाह की समस्या

पुरूष की भोगलालासा, विषम सामाजिक परिवेश, नारी को दिया जानेवाला गौण स्थान, अभिभावकों की स्वार्थी मनोवृत्ति एवं लापरवाही, नारी की विवशता, जबरन थोपे गए यौन- सम्बन्ध आदि के कारण अनमेल विवाह सम्पन्न होते हैं । वास्तव में यह दोष समाज का है । इससे कई समस्याएँ निर्माण होती हैं जैसे अवैध यौन सम्बन्ध, पारिवारिक संघर्ष एवं तनाव, नारी को दिया जानेवाला वैधव्य का अनचाहा उपहार आदि । इन समस्याओं का चित्रण हिन्दी के अनेक उपन्यासकारों ने किया है । "आधा गाँव" उपन्यास में मौलवी बेदार जो पचास वर्ष के हैं वह चौदह-पन्द्रह साल बछ्निया से विवाह करना चाहते हैं । वह उसके साथ मेहर देकर निकाह करना चाहते हैं । घर-परिवार और रिश्तेदार इस विवाह का विरोध करते हैं परंतु मौलवीसाहब अपने इरादे से हटते नहीं । वे अपनी शादी बछ्निया से पक्की करते हैं । बाद में पता चलता है कि बछ्निया गर्भवती है । वह शादी से पहले एक रात साफिखा के साथ भाग जाती है । मौलवी बेदार सिर पीटकर रोते हैं । न बछ्निया उन्हें मिलती है न उनकी इज्जत बचती है । इसप्रकार मौलवी सबके सामने हास्यास्पद बनते हैं । यहाँपर उपन्यासकार ने अनमेल विवाह की अमानवीयता और बिडम्बना को स्पष्ट किया है ।

13) अवैध संतान की समस्या

विवाहबाहय यौन सम्बन्धों से उत्पन्न होनेवाली संतान अवैध संतान कही जाती है । समाज ऐसी संतान की ओर कडवी नजर से देखता है । कुमारी माता की संतान, वेश्या से उत्पन्न संतान आदि अवैध संतान समझी जाती है । ऐसी संतानों से समाज में अनेक समस्याएँ पैदा हो जाती हैं । उन बच्चों की परवरिश , शिक्षा-दीक्षा, विवाह आदि सब बातों का समाजपर भार पडता है और नैतिकता की समस्याएँ निर्माण होती हैं । हिन्दी उपन्यासों में इसका चित्रण मिलता है । 'दादा कामरेड" "कंकाल", आदि उपन्यासों में इसका चित्रण है ।

राही मासूम रजा जी ने "आधा गाँव" में कमालुद्दीन के चरित्रद्वारा अवैध संतान की

समस्याओं से हमें परिचित किया है । कमालुद्दीन जवाद मियाँ की रखैल रहमान–बो का लडका है । उसकी माँ जुलाहिन है । इसके कारण वह अवैध या कलमी औलाद समझी जाती है । अपने इस स्थिति से कमालुद्दीन दु:खी होता है । उसके मन में माँ–बाप के प्रति इज्जत नहीं है । बाप को जो प्रतिष्ठा समाज में मिलती है वह उसे नहीं मिलती इसलिए वह गाँव के हलाली लोगों से नफरत करता है । अपनी माँ का गौण स्थान देखकर उसे बहुत दु:ख होता है । एक बार पाकिस्तान का प्रचार करने आये लोग उससे पूछते हैं कि क्या आपके वालिद और वालिदा भी वोटर हैं । आपनी माँ को पहलीबार कोई वालिदा कहते देखकर उसे बहुत खुशी होती है ।

इसकेद्वारा लेखक ने अवैध संतान की इज्जत–सम्मान प्राप्ति की लालसा चित्रित की है । इसकी पूर्ति न होने पर उनमें मानसिक तनाव, घुटन बढती है । सामन्तवादी मनोवृत्ति के लोग झूठी प्रतिष्ठा के लिए रखैल संस्कृति को प्रश्रय देते हैं । ऐसे सम्बन्धों से उत्पन्न संतानों के विवाह की समस्या समाज की चिंता का विषय है ।

डॉ.राही मासूम रजाजी ने इस समस्या को कमालुद्दीन के द्वारा चित्रित किया है । जो डॉक्टर है, वह रखैलपुत्र है । वह असली शीआ लडकी सईदा से प्यार करता है परंतु सामाजिक मर्यादा के कारण तु अपना प्यार प्रकट भी नहीं कर सकता । वह अपने को अपराधी मानकर कोसता है । वह सोचता है कि अगर वह जुलाहिन माँ से पैदा न होता तो सईदा से जरूर विवाह करता । यहाँपर लेखकने ऐसे सम्बन्धों से उत्पन्न संतानों की मानसिक दशा–घुटन और बिखराव को स्पष्ट किया है ।

14. अवैध मातृत्व की समस्या

जब कोई नारी सामाजिकता की अवहेलना करके मातृत्व प्राप्त करती है तब समाज के सामने वह अवैध मातृत्व की समस्या के रूप में सामने आती है । पुरूष प्रधान भारतीय समाज में विवाहपूर्व माँ बननेवाली नारी को अनेक मुसीबतों को झेलना पडता है । उसे मातृत्व देनेवाले पुरूष को बेदाग छोड समाज नारी को दण्ड देता है । उसे अपमानीत करता है । घर के लोग पेट के गर्भ से उसे मुक्त करने की कोशिश करते हैं । ऐसी लडकी माँ–बाप के लिए संकट सिध्द होती है।

उसे किसी भी अपात्र के हाथ सौंप देते हैं ।

"आधा गाँव" की बछनिया के पेट में सफरिबा का गर्भ है । उसके घरवाले उसे बूढे मौलवी बेदार के साथ बाँध देने की योजना बनाते हैं । परन्तु बछनिया प्रेमी के साथ भागकर कलकत्ता में शादी करती है । उसके भाग जाने के दु:ख से उसकी माँ कुएँ मे कूदकर आत्महत्या करती है और बाप भी पत्नी का अनुकरण करता है ।

प्रस्तुत उदाहरण के द्वारा उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि ऐसे सम्बन्धों के कारण पारिवारिक जीवन बिखर जाता है और लडकी के अपमानीत होकर बेघर होना पडता है ।

15. वेश्यावृत्ति

वेश्यावृत्ति स्त्रियों और पुरुषों का एक अनैतिक व्यापार है । वेश्यावृत्ति के कारण पारिवारिक तनाव में वृध्दि, अवैध संतानों के जन्म की समस्या, अनेक रोगों का प्रसार, सानाजिक विषमता की दरारों में वृध्दि, अपराध वृत्ति में वृध्दि, रुग्ण मानसिकता आदि अनेकानेक समस्याएँ निर्माण होती हैं । वास्तव में वेश्या समाज की आवश्यकता और बाधा भी है । आदिकाल से वेश्या व्यवसाय चलता आया है ।

मुस्लिम तवायफें, हिन्दू नर्तकियाँ, पहाडी स्थानों की वेश्याएँ, जनजातीय वेश्याएँ, देवदासी वेश्याएँ, शाही वेश्याएँ, विदेशी वेश्याएँ, विक्रीय वेश्याएँ, कॉलगर्ल्स, चलचित्र वेश्याएँ, तीर्थस्थानों की वेश्याएँ आदि अनेकानेक प्रकार की वेश्याओं का उल्लेख भारत में मिलता है ।

आर्थिक परिस्थिति के कारण तथा घर का बो सँभालने या शारीरिक विवशता अथवा रुग्ण मानसिकता आदि कारण नारी को वेश्यावृत्ति को अपनाने के लिए बाध्य होना पडता हैं । स्वस्थ समाज और प्रगतिशील राष्ट्र के लिए वेश्या प्रथा कलंक है ।

हिन्दी साहित्य में वेश्या समस्या को अनेक कोणों से परखकर समाधान देने का सफल प्रयास

प्रगतिशील लेखकोंने किया हैं । डॉ.राही मासूम रजा जी ने भी इस समस्या के कई रूपों को सशक्त रूप में चित्रित किया हैं । "आधा गाँव" में चित्रित वेश्या टामीबाई जो अपने जमाने में मशहूर समझी जाती है वह कुछ दिनों बाद वेश्या व्यवसाय छोडकर शिवभक्त हो गई है । उसकी जवानी खत्म होने के कारण उसका आकर्षण लोगों के लिए कम होता है और उसकी तरफ कोई देखता नहीं । उसे भक्त बनकर मन बहलाना पडता है । बुढापा उसे बोझ लगता हैं ।

16. रखैलप्रथा

गंगौली में वेश्याओं की नथ उतारने की प्रथा रहती है । अनेक जमींदारों और धनवानों में वेश्या की नथ उतारने की होड लगी रहती है । क्योंकि नथ उतारना वे गौरव का कार्य समझते हैं । –"जब गुलाबी जान ने नथ पहनी और यह खबर खान साहब को मिली कि नसीराबाद के ठाकूर साहब गुलाबीजान की नथ उतारने का फैसला कर चुके हैं, तो खान साहब को ताव आ गया । बोले "वह क्या खाकर गुलाबीजान की नथ उतारेगा । भाई साहब मरहूम ने उसकी बडी बहन की नथ उतारी थी, इसलिए गुलाबीजान की मैं उतारूंगा।(17)रखैलों को घर में रखने की प्रथा गाँव के जमींदारों में अधिक रहती है । गंगौली के मुसलमान जमींदार किसी गैर औरत को घर में रखना बुरा नहीं समझते थें । घर में खाने को हो न हों पर वे रखैल रखने का अपना शौक पूरा करते हैं ।

गंगौली के मुस्लिम जमींदार रखैल रखना प्रतिष्ठा मानते हैं । गोरेमियाँ, जहीरमियाँ, फुन्ननमियाँ आदि ने रखैल रखी हैं । पर वही लोग उनकी संतान के साथ विवाह करना अपमान मानते हैं । जब मौलवी बेदार जैसे पक्के शीआ मुस्लिम चमारिन लडकी बछनिया के साथ अपने विवाह की बात पक्की करते हैं तब दूसरे शीआ लोग उन्हें भला–बूरा कहते हैं । सभी इस विवाह का विरोध करते हैं । यहाँ के जमींदार रखैल के साथ शरीर सम्बन्ध रखते हैं पर रक्तशुध्दता और कुलीनता को बनाए रखने के लिए उनकी संतानों के साथ विवाह करना अपमान या हीनता समझते हैं । यहाँपर लेखक ने जमींदारों की दिखावे की मनोवृत्ति और कुलीनता के ढोंग को स्पष्ट कर कई एक समस्याओं का चित्रण किया है ।

17. विधवा समस्या

हिन्दी साहित्य में विधवा समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में चित्रित है । प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में विधवा के तपःपूत जीवन क वर्णन मिलता है । विधवाओं की तरफ देखने का दृष्टिकोन प्रेमचन्द युग से थोडा बहुत बदल गया । प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास "वरदान", "प्रतिज्ञा", सेवा सदन "गबन", प्रेमाश्रम", "कर्मभूमि", आदि में विधवाओं के जीवन को अलग अलग तरीके से चित्रित किया हैं ।

इस्लाम धर्म में विधवाओं के पुनर्विवाह के सम्बन्ध में कोई धार्मिक बन्धन नहीं है । फिर भी मुस्लिम समाज में विधवाओं की स्थिति अच्छी नहीं है । उसे समाज में निम्न स्थान ही दिया जाता है । उसे अच्छा खाना, अच्छा कपडा पहनने की अनुमति नहीं होती उस पर अनेक प्रतिबंध लगाए जाते हैं ।

राहीजी के "आधा गाँव" मे चित्रित पात्र उम्मुल हबीबाद्वारा विधवा समस्या को दर्शाया है । वह हुसैन अली मियाँ की बहन थी । शादी के तीसरे दिन ही वह विधवा बन गई और तब सेवह सफेद कपडे पहन रही थी । उम्मुल हबीबा शादी–ब्याह के मौकों पर अछूत हो जाती थी । दुल्हन के कपडों को वह छू नहीं सकती थी । धीरे धीरे उसे इन्ही बातों की आदत सी हो गई और बेवा के करायज क्या होते हैं ? यह भी उसे मालूम हो गया । फिर भी वह हमेशा यह सोचती रहती है कि जब आं–हजरत ने पहली शादी बेवा से की तो क्या यें अशराफ आं–हजरत से बडे हैं कि, बेवा से शादी नही करते । लेकिन यह सवाल वह किसीसे पूछ नहीं सकती थी ।

इसप्रकार लेखक ने दिखाया है कि विधवाओं की समस्या का स्वरुप भारतीय मुस्लिम परिवारों मे कुछ भी अलग नहीं है ।

निष्कर्ष

डॉ.राहीजी ने "आधा गाँव" में यथार्थता को वाणी दी है । उन्हें प्रत्यक्ष जीवन में जो

देखने मिला उसे इस उपन्यास में प्रकट किया हैं । उन्होने पाकिस्तान निर्माण के पश्चात मुस्लिम लोगों की बनी मानसिकता का चित्रण बहुत अच्छा किया हैं । यह चित्रण शायद पहली बार पाठकों के सामने प्रस्तुत हुआ है । लेखक ने जिसके बारे में जानकारी पक्की है केवल उसे ही यहाँ प्रस्तुत किया है ।

साम्प्रदायिकता की समस्याद्वारा लेखक ने हिन्दू–मुस्लिम झगडों को चित्रित किया है । साम्प्रदायिक झगडों में जनता की हानि होती है । इन झगडों को बंद करने के लिए लोगों का पूर्वग्रह दूषित मन साफ होना चाहिए इसके लिए उन्हें पहले शिक्षित बनाना आवश्यक है । उनका आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक दर्जा बढाना चाहिए । इससे साम्प्रदायिकता की समस्या थोडी बहुत कम हो सकती है । इस तथ्य को उपन्यासकार ने स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है ।

जातिवाद की समस्या कम करने के लिए रोटी–बेटी व्यवहार कर लेना चाहिए । अस्पृष्यता खत्म करके आंतरजातीय लोगों में रोटी–बेटी व्यवहार शुरु कर लेने चाहिए । राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार और प्रसार करना चाहिए । इन सब बातों से जातीयता कम हो सकती है । ऐसा आशावाद उपन्यासकार प्रकट किया है ।

उपन्यासकार ने जमींदारी शोषण और उनके कुकर्मो का विस्तार के साथ वर्णन किया है । इसे नष्ट करने के लिए शिक्षाप्रसार, आर्थिक स्वावलम्बन आवश्यक माना हैं ।

लेखक ने हिन्दी और उर्दू भाषा में खास कोई अन्तर न देखकर दोनों का एक ही भाषा के दो रूप मानकर विवेचन किया हैं ।

भ्रष्टाचार की समस्या के रूप में लेखक ने गाँवों में होनेवाले भ्रष्टाचार को वर्णित किया है । गाँव के लोग अनपढ, गँवार होते हैं जिन्हे आसानी से ठग लिया जाता है । सरकारी दफ्तरों, कोर्ट–कचहरी आदि में व्याप्त भ्रष्टाचार को लेखकने दिखाया है ।

गंगौली की बेरोजगारी, दरिद्रता तथा उसके परिणम से निर्माण ऋणग्रस्तता की समस्या को

रजा जी ने दिखाया है । मध्यवर्गीय समाज इसमें बुरी तरह से फँस गया है इसका चित्रण किया हैं ।

लेखक ने विवाह के बाद भी पति–पत्नियों में प्रेम होना आवश्यक माना है । अनमेल विवाह, अवैध मातृत्व और अवैध सन्तान की समस्याओं को चित्रित कर समाज में उनकी स्थिति एवं दुष्परिणामों को अभिव्यक्त किया है ।

उपन्यासकारने वेश्यावृत्ति के कारणों का विवेचन कर, उनकी विवशताओं को चित्रित कर उनके प्रति सहानुभूति दर्शायी है ।

विधवा समस्याद्वारा लेखकने मुस्लिम समाज में पाई जानेवाली विधवाओं की स्थिति बताई है ।

उपन्यासकार ने अपनी भोगी और देखी हुई जिंदगी को प्रभावी ढंग से अंकित करते हुए समकालीन समस्याओं का आलेख प्रस्तुत किया है ।

संदर्भ

अ.क्र.	उपन्यासकार	उपन्यास का नाम	पृ.क्र.
1.	डॉ.राही मासूम रजा	"आधा गाँव"	269
2.	– वही –	– वही –	298
3.	– वही –	– वही –	162
4.	– वही –	– वही –	297
5.	– वही –	– वही –	10
6.	– वही –	– वही –	17
7.	– वही –	– वही –	309
8.	– वही –	– वही –	261
9.	– वही –	– वही –	221–22
10.	– वही –	– वही –	150
11.	– वही –	– वही –	144
12.	– वही –	– वही –	10
13.	– वही –	– वही –	340
14.	– वही –	– वही –	261–62
15.	– वही –	– वही –	209
16.	– वही –	– वही –	214
17.	– वही –	– वही –	92